मु० नगर बीतक का संक्षिप्त वर्णन

जैसा कि सब सुन्दर साथ जानते हैं कि किस प्रकार हमने अपने निज घर को छोड़ कर नश्वर संसार को देखने की इच्छा करके आए और आकर फँसे भी ऐसे कि पुनः ये याद भी नहीं आया कि अपना भी कोई घर है तो ऐसा माया का वज्रलेप चढ़ा देखकर अपने धाम के धनी बार-बार हम सब सुन्दर साथ के लिए माया में भटके, अनेक कष्ट सहे जैसा कि हम सब श्री बीतक साहब सुनकर अवगत हुए। श्री जी की नजरें इनायत से हम मु० नगर के गरीब नाचीज सुन्दर के लिए इस बार श्री बीतक साहब १५ मई से मेरे सतगुरु महाराज श्री जगदीशचन्द्र जी आहूजा के द्वारा प्रारम्भ हुई।

जिस प्रकार से २५ दिन तक श्री बीतक साहब व कीर्तन आरती के रूप में श्री जी की अपार मेहर व उनके प्यार की वर्षा हुई उसके योग्य हम सुन्दर साथ कभी नहीं थे न ही हो सकते है हर स्थान पर चर्चा होती है। उसके पश्चात् वहां का वर्णन पढ़ने व सुनने को मिलता है कि किस प्रकार सब सुन्दर साथ उस घड़ी को आतुरता से प्रतीक्षा किया करते है कि कब घर की याद दिलाने के लिए हमारे बीच पधारे अदरणीय भापा जी के द्वारा वाणी सुनने को मिली। लेकिन प्यारे सुन्दर साथ जी आपको पढ़कर व सुनकर आश्चर्य भी होगा और बरबस धनी की मेहर की ओर आकर्षित होगा कि यहां रात्रि ९ बजे बीतक का समय होता तो पु० भापा जी साढ़े ८ बजे ही मन्दिर में बैठकर प्रतीक्षा करते कि कब ९ बजे और मेरा सुन्दर साथ मायावी बन्धों से निपट कर आए तो हम परमधाम में किए वायदा-नुसार एक दूसरे को घर को याद दिलाकर माया से निकाल कर धनी के चरणों में पहुंचे। ठीक ९ बजे सुन्दर साथ के मन्दिर पहुँच जाने पर श्री जी की अमृतमयी वाणी की मधुर गुन्जार हम लोगों के पत्थर दिलों को कचोट कर रख देती। जैसा कि सदा सदा से ही श्री जी की वाणी किसी न किसी रूप में सुन्दर साथ को जगाने में सफल रही है तो ये भी उन्ही की मेहर का एक स्वरूप हैं वरन् इस कालमाया में नासूत का वजूद माया की बुद्धि उस अखण्ड घर का वर्णन कैसे कर सकती है। (शेष पृष्ठ २२ पर)

Nijanand App

(पृष्ठ ४ का शेष)

७ जून रविवार रात्रि ९ बजे से १२ बजे तक समाप्ति पूजन के शुभ अवसर पर हमारे प्रिय भैया कृष्ण कुमार व बहन आशा के मधुर स्वर ने मन्दिर के प्रांगण की शोभा को चार चांद लगा दिए। इन चन्द शब्दों में ही श्री बीतक साहब का संक्षिप्त विवरण पढ़ने वाले व सुनने वाले को सुन्दर साथ को इस नाचीज को प्रणाम।

चरण रज—

कु० पूर्णा

मुजफ्फरनगर

धन्यवाद

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती कुलवन्ती बाई सलूजा के धाम गमन पर उनके निमित्त रखे गए पाठ के समाप्ति पूजन (रसम किरया) पर दिनांक ९-८-८१ को दूर-दूर से सुन्दर साथ ने स्वयं पधार कर एवं पत्रों द्वारा जो संवेदना प्रकट की, मेरे दुःखी परिवार को सान्त्वना दी और उनकी आत्मा के पारब्रह्म में लीन होने की धाम धनी (महाप्रभु) से प्रार्थना की उसके लिए मैं अपनी एवं अपने परिवार की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद एवं सादर प्रणाम अर्पित करता हूँ।

—चमनलाल सलूजा

कानपुर

महामन्त्री, श्री निजानन्द आश्रम ट्रस्ट (रजि०) इन्दौर

Nijanand App